

573/24

प्राची क इतके अचिन्त अगुणविरा।
आकाश तिलवारी गर्भे। लेने मने
मैरे उपस्थित नही आप। अरा
प्राची क प्रथम पत्र अरु
हाजी अरु जेही नै लगीत
रिप जागई। पत्राचली नरु
के मरु अरु साक्षि एव
है ॥३

